Prof. Khushbu Kumari
Guest Teacher
Dept. of Political science
V.S.J. College, Rajnagar, Madhubani. (LNMU)

Class - B.A-3(H)
Paper - VI

Page No.
Date

Topic — अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति (क्षेत्र)

Lecture - 1

एक अध्ययन विषय के रूप में, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति अपेक्षाकृत एक नया विषय है इसलिए अभी तक इसका क्षेत्र ठीक से निर्धारित नहीं हुआ है। इसलिए अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र के सम्बन्ध में विद्वानों मे मतभेद पाये जाते हैं। सन् 1947 में 'विदेशी मामलों की परिषद्' ने एक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया था जिसमें एक सर्वेक्षण के आधार पर ग्रैसन कर्क ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की विषय-वस्तु में पांच तत्वों का अध्ययन शामिल किया था —

(i) स्टेट सिस्टम या राज्य-व्यवस्था के स्वरूप एवं कार्य प्रणाली का अध्ययन,
(ii) राज्य की शक्ति को प्रभावित करने वाले तत्वों का अध्ययन
(iii) अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति एवं महाशक्तियों की विदेश नीतियों का अध्ययन
(iv) वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के इतिहास का अध्ययन तथा,
(v) अधिक स्थायित्व वाली विश्व-व्यवस्था के निर्माण की प्रक्रिया का अध्ययन

चार्ल्स श्लाइचर सभी अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में शामिल करते हैं। हान्स मार्गेन्थाऊ ने राष्ट्रों के राजनीतिक संबंधों और विश्व-शान्ति की समस्याओं को केन्द्र-बिन्दु मानकर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का विश्लेषण किया है

रॉबर्ट स्ट्राउस अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र में नागरिकों के कार्यों और राजनीतिक महत्व वाले गैर-सरकारी समुदायों के क्रिया-कलापों को भी शामिल करते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र के अन्तर्गत निम्नलिखित विषयों को शामिल किया जा सकता है —

(1) राज्य का अध्ययन — अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन का केन्द्र-बिन्दु राज्य होता है। इसके अन्तर्गत दो या दो से अधिक राज्यों के बाह्य व्यवहारों तथा आपसी क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

(2) राष्ट्रीय हितों का अध्ययन — अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में राष्ट्रीय हित वह केन्द्र-बिन्दु है जिसके चारों ओर सम्पूर्ण राजनीति घूमती है। इसलिए अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में विभिन्न राष्ट्रों के राष्ट्रीय हितों का अध्ययन आवश्यक हो जाता है।

(3) शक्ति का अध्ययन — अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में जितना अधिक जोर शक्ति पर दिया जाता है, उतना किसी और विषय पर नहीं दिया जाता। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में सभी राज्य शक्ति के उपार्जन के लिए प्रयत्नशील होते हैं और शक्ति का दृष्टिकोण ही उनकी विदेश नीति की रचना में सबसे अधिक निर्णायक भूमिका निभाता है।

Scanned with CamScanner

(4) विदेश नीति का अध्ययन — फैलिक्स ग्रॉस का मत है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अध्ययन वास्तव में विदेश नीतियों का अध्ययन है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अन्तर्गत उन तत्वों का अध्ययन होता है जिनसे किसी देश की विदेश नीति बनती है। इनमें दो तत्व राष्ट्रीय हित एवं राष्ट्रीय शक्ति प्रमुख है। विदेश नीति में विभिन्न देशों के मध्य राजनीतिक, आर्थिक, व्यापारिक, सैनिक, सांस्कृतिक, कूटनीतिक आदि संबंधों का अध्ययन किया जाता है।

(5.) अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के आर्थिक उपकरणों का अध्ययन — अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में बढ़ते हुए आर्थिक तथा व्यापारिक सम्बन्धों की महत्वपूर्ण भूमिका है। आज राज्यों के बीच विदेशी सहायता, ऋण, व्यापार, अनुदान आदि राज्यों के पारस्परिक सम्बन्धों को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण तत्व है। इसलिए आर्थिक उपकरणों का अध्ययन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का आवश्यक अंग है।

(6) अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं एवं क्षेत्रीय संगठन का अध्ययन — वर्तमान में राज्यों के सम्बन्धों को बनाने के लिए संस्थागत साधनों के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं का तीव्र गति से विकास एक मुख्य विशेषता है। राज्यों के मध्य आर्थिक, सैनिक, तकनीकी और सांस्कृतिक सहयोग की वृद्धि करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संगठन बनाये जाते है। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना ने अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के महत्व को बहुत बढ़ा दिया है। वर्तमान में अन्य संस्थाएँ भी

Scanned with CamScanner

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है —

आर्थिक संस्थाएं — यूरोपियन साझा बाजार, विश्व बैंक, कोलम्बो योजना, विश्व व्यापार संगठन इत्यादि।

सैनिक — नाटो (NATO), सीटो (SEATO), सेण्टो (CENTO), वारसा संधि इत्यादि।

राजनीतिक — राष्ट्रसंघ, संयुक्त राष्ट्रसंघ

सांस्कृतिक एवं अन्य — यूनेस्को, अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, विश्व स्वास्थ्य संगठन इत्यादि।

Khushbu Kumari

Scanned with CamScanner